कक्षा- VI

फटा हुआ बूट

1. एलिया प्रतिदिन कहाँ जाता था और वहाँ क्या करता था?

उत्तर- एलिया प्रतिदिन कचहरी जाता था और वहाँ कोई मुकदमा न मिलने पर एकांत में बैठकर अपनी पत्नी को संबोधित करके कविताएँ लिखा करता था।

2.गाड़ीवान कहाँ से आ रहा था? उसने एलिया को क्या समाचार दिया?

उत्तर- गाड़ीवान तेर्सनोवा से आ रहा था। उसने एलिया को यह समाचार दिया कि उसके चाचा जी बहुत बीमार हैं।

3. चाचा के घर जाते समय एलिया अपने फटे हुए बूट के बारे में क्या सोच रहा था?

उत्तर- चाचा के घर जाते समय एलिया अपने फटे हुए बूट के बारे में यही सोच रहा था कि उसके चाचा जी अमीर हैं और उनके घर ऐसा बूट पहनकर जाने में बेइज़्ज़ती होगी।

4.इस पाठ से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर- इस पाठ से हमें यही शिक्षा मिलती है कि धन कमाने के लिए सदैव परिश्रम और ईमानदारी का मार्ग चुनना चाहिए। परिश्रम और ईमानदारी से कमाया हुआ धन ही उपभोग करने पर सुख और आनंद की अनुभूति होती है। हम अपनी मेहनत से कमाए गए धन का ही महत्व समझ सकते हैं और उसका सही उपयोग कर सकते हैं परंतु बिना मेहनत किए प्राप्त धन का महत्व नहीं समझ पाते और उसे पाने के लिए सभी ग़लत तरीकों का प्रयोग करते हैं, जो हमारे पतन का कारण बनता है।

5. धर्मशाला की कोठरी में लेटे हुए एलिया को चारों तरफ बूट- ही-बूट क्यों दिख रहे थे?

उत्तर- एलिया अपने चाचा जी से मिलने जा रहा था जो बहुत अमीर  थे और जीवन के अंतिम पड़ाव पर थे। एलिया उनका एकमात्र वारिस था। रात बिताने के लिए वह धर्मशाला में रुका था, जहाँ वह अप्रत्याशित धन मिलने की खुशी से फूले नहीं समा रहा था और सोच रहा था कि अमीर बनने के बाद वह बहुत सारे बूट खरीद लेगा। इसी कारण उसे सभी जगह बूट -ही- बूट दिखाई दे रहे थे।

6. दूसरे मुसाफ़िर का जूता पहनने पर एलिया को अस्पष्ट स्वर में क्या सुनाई दिया?

उत्तर-एलिया अपने फटे बूट को दूसरे मुसाफ़िर के बूट से बदलना चाहता था। दूसरे मुसाफ़िर का जूता पहनने पर एलिया को उसकी अंतरात्मा की आवाज़ सुनाई दी जो उसे फटकार लगा रही थी कि वह अपने पतन की ओर जा रहा है। यह कार्य सही नहीं है, बल्कि नैतिक रूप से पाप है।

7. जब भी एलिया किसी का बूट चुराकर पहनता तो उसे 'पतन! घोर पतन!' का स्वर क्यों सुनाई देता था?

उत्तर- जब एलिया ने बूट चुराकर पहना तो उसे 'पतन! घोर पतन!' की आवाज़  सुनाई दी, क्योंकि उसकी अंतरात्मा जानती थी कि वह चोरी कर  रहा है जो कि  ग़लत काम है और उसे ऐसा नहीं करना चाहिए।

ये स्वर उसकी अंतरात्मा द्वारा धिक्कार के शब्द थे, जो उसे सुनाई पड़ रहे थे।

8. एलिया धर्मशाला वापस क्यों आया?

उत्तर- एलिया बूट चोरी कर उसे पहनकर अपने रास्ते जा तो रहा  था,पर वह एक अनजाने भय से घिरा हुआ था, उसे लग रहा था मानो कोई उसका पीछा कर रहा है और उसकी चोरी पकड़ी जाएगी। उसके पैर लड़खड़ा रहे थे और कदम भी आगे नहीं बढ़ रहे थे।

अपनी ग़लती का एहसास होने पर तथा इस भय से छुटकारा पाने के लिए उस मुसाफ़िर का बूट लौटाने वह वापस धर्मशाला आ गया।

9. चाचा की संपत्ति ना मिलने पर एलिया की पत्नी ने क्या कहा और क्यों?

उत्तर- चाचा की सम्पत्ति न मिलने पर उसकी पत्नी ने कहा, "अच्छा ही हुआ, जो वह संपत्ति हमें नहीं मिली। जिस संपत्ति के मिलने से पहले ही आदमी अपनी ईमानदारी खो बैठे, उसका न मिलना ही अच्छा है।"

उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि एलिया ने उसे चाचा के घर जाने के दौरान हुआ वाक़या सुनाया कि कैसे वह अपने चाचा के रुतबे की बराबरी करने के लिए अपने आप को पतन की राह पर ले गया।

तभी उसकी पत्नी ने ये बातें कही।

10. बूट चुराने पर एलिया की क्या स्थिति थी और उसके मन में क्या विचार उठ रहे थे अपना उत्तर लगभग 25 शब्दों में लिखिए।

उत्तर- बूट चुराने पर एलिया की मनोदशा बहुत बुरी थी और उसके मन में यह विचार उठ रहे थे कि वह बहुत बड़ा पाप कर रहा है । उसके कदम लड़खड़ा रहे थे और वह बार-बार पीछे मुड़ कर देख रहा था कि कहीं कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा। उसे लग रहा था कि  राह  चलते लोग उसे चोर समझ रहे हैं।उसके मन की आवाज़ उसे बार-बार धिक्कार रही थी कि वह चोरी कर के पतन की ओर जा रहा है और उसे ऐसा नहीं करना चाहिए।

★ निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाइए-

संबोधित-  संबोधन

बीमार- बीमारी

शांत- शांति

गंभीर- गंभीरता

बेचैन- बेचैनी

मुसकराना- मुस्कान

तेज- तेजस्वी

ठंड - ठंडक

सुख- सुखी

चौकीदार- चौकीदारी

लड़खड़ाना- लड़खड़ाहट

थकान- थकावट

ईमानदार- ईमानदारी

अच्छा- अच्छाई

बुरा- बुराई

★ निम्नलिखित शब्दों में प्रत्ययों को अलग करके लिखिए-

परिचित- इत

रहस्यमयी- ई

मुस्कुराहट- आहट

कलंकित- इत

थकान- आन

देहांत- अंत

नौकरानी- आनी

ईमानदारी- ई

★ निम्नलिखित उर्दू शब्दों के लिए हिंदी पर्याय लिखिए-

ख़्याल- विचार

मुसाफ़िर- पथिक

ख़बर- समाचार

बेचैन- परेशान

खर्च- व्यय

तेज़- तीव्र

तकलीफ़- कष्ट

आवाज़- स्वर

परवाह- चिंता

खामोश- मौन